

ASHA ARCHIVES

आशा कव्वाथि

1. 133

ASHA ARCHIVES

१॥ गङ्गा सायनमः ॥ वे नि तं च विपदां
विनासकं वा रुतादिवसूत्रं नो रुदा
कामिनीसूत्रं गृह्णादि ला रुदा मंगलासकं
मंगलादया ॥ १ ॥ ५४ दवसा क कूल आग
वृद्धि नी वा गुण च कलसु ज नं ॥ ॥ जं न ला

गकथिना रुतदासोऽयिं गला च कथिनासुख
दादो ॥ २ ॥ धनं धानं वृद्धिं धाना धमा न्य
सदाशु धरुमा जयं धर्यं वं नं क न गुं ग जा नां
सुखं विगुं कुं श नं ध न का धा गु वृद्धिं क न मि
॥ ३ ॥ विद स जु सं हानि सु ध ग नं च क न गुं ग
यि दो सु खं व र्जि न त्वा ॥ ॥ न न्या धि वृद्धिं सु ख नं

यु कायं दशजानी राग रंगं क जामि ॥ ४ ॥
धनां नाय वृद्धिं गुणानां युक्तं समिचीनवसुंग
मं जाजमा न्य ॥ अतं का तदि व्याग ना राग सोखं ॥
सदा रुद्रु का रुद्र कार्यं क जामि ॥ ५ ॥ अतं धाधि
कलं क जनां यु कायं धना दशु द जादि का
नां विजा गं ॥ स ग पु वि वा दं स द न वं ध वे नः

दसा वाकि का नर्थ क गु स दे व ॥ ६ ॥ ज
का वि मा नं स्व ज नादि सो र्थं धा न्यादि ला रं
गु न कि र्ति सि धिं ॥ ला मा दि ला रं सून वृ धि
सो र्थं वि द्यां व सि धं यु क जामि र्थं सां ॥ ७ ॥ ज
ना नां वि वा दं जाला नां यु कायं क न गुं दि क व
य शु नां वि ना सं ॥ गृ ह स्व ल्य वा सं यु वा सा लि

ASHA ARCHIVES

आशा सरस्वती

1133

ASHA ARCHIVES





